राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

मन, बुद्धि और चित्त संसार की सबसे अद्भुत वस्तु

यदि मुझ से कोई पूछे कि संसार की सबसे अद्भुत वस्तु कौन-सी है, तो मैं उसका उत्तर एक ही शब्द में दूँगा। वह शब्द हैं 'आत्मा' अथवा 'परमात्मा'। अन्य लोगों से यदि यही प्रश्न किया जाये तो शायद उनमें से कई ताजमहल(आगरा) को, कोई 'चीन की दीवार' को और कई अन्य किसी वस्तु अथवा विज्ञान के आविष्कार का नाम लेंगे। परन्तु मैं इस सृष्टि में आत्मा ही को सबसे अधिक अद्भुत और विचित्र मानता हूँ क्योंकि इस संसार में मनुष्य अथवा अन्य किसी चैतन्य सत्ता से बनाई गई जो बहुत ही अद्भुत वस्तुएँ हैं उनका भी रचयिता तो आत्मा ही है। वस्तु के स्थूल निर्माण से भी पूर्व तो उसकी रूप-रेखा आत्मा ही में जाग्रत होती है। आत्मा ही उस संकल्प को प्रकृति रूपी सामग्री का आधार लेकर मूर्त्त रूप देती है। अतः संकल्प, विवेक, निश्चय, स्मृति, धारणा, ध्यान, कल्पना इत्यादि शक्तियाँ जो ही आत्मा की चैतन्यता की परिचायक हैं, अति विचित्र हैं। क्योंकि इन्हीं से सब वस्तुओं की रचना हुई है। इसलिए गीता के भगवान भी आत्मा को आश्चर्यवत् बताते हुए कहते हैं कि:–
"आश्चर्यवत् पश्यति कश्चित एनम्..."
अर्थात् आत्मा के विषय में जो चर्चा है, लोग उसे आश्चर्यवत सुनते-देखते और कहते हैं।

आत्मा की योग्यताओं-शक्तियों का महत्व

ऊपर आत्मा जो कई एक योग्यताएँ शक्तियाँ बताई गई हैं, उन्हों के कारण आत्मा अद्भुत कही गई है, उन्हीं का ठीक प्रयोग, सदुपयोग ही आत्मा का पवित्र होना महात्मा होना है। इन्हीं शक्तियों अथवा योग्यताओं के नियंत्रण, शोध अथवा मार्गान्तरीकरण से आत्मा जीवनमुक्ति को प्राप्त करती है और इन्हीं के विकृत, कुण्ठित, पथभ्रष्ट, निकृष्ट होने से आत्मा दुःखी और अशान्त होती है क्योंकि यही तो समन्वित रूप में आत्मा की सत्ता अथवा स्वरूप है। अतः आत्मा के शुद्ध संकल्पों, सद्विवेक, सत्य-निश्चय, ईश्वर-स्मृति इत्यादि को जानना ही आत्मा के स्वरूप को जानना है और परमात्मा के विवेक यानी ज्ञान को जानना ही परमात्मा को जानना है। यह जानने से आत्मा स्वरूप-स्थित हो जाती है, अपनी गँवाई हुई शक्तियाँ अथवा योग्यताएं पुनः प्राप्त कर लेती है और परमात्मा के स्वरूप, गुण, कर्म इत्यादि के ज्ञान द्वारा अपनी समृति को उसमें निष्ठ करने से दैवी गुणों वाली हो जाती है।

संकल्प-विवेक इत्यादि क्या हैं?

परन्तु संकल्पों, विवेक, निश्चय, धारणा, स्मृति, ध्यान इत्यादि की शुद्धि क्या है, इसको जानने से पूर्व तो यह जानना आवश्यक है कि यह है क्या वस्तुएं। यूँ तो ऊपर इन योग्यताओं अथवा शक्तियों का जो महत्व-दर्शन कराया गया है, उससे भी सिद्ध है कि ये स्वयं आत्मा ही की आत्मीयता है। परंतु कई देह-अभिमानी और मिथ्या-ज्ञानाभिमानी लोग इन्हें प्रकृतिकृत सत्ता मानते हैं। अतः थोड़ा स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि ये प्रकृतिकृत सत्ताएं नहीं हैं।

क्या मन-बुद्धि इत्यादि प्रकृतिकृत नहीं?

जो लोग मन इत्यादि को आत्मा से अलग, सूक्ष्म प्रकृति का बना मानते हैं, वह अपने मत को कई उदाहरणों से स्पष्ट करना चाहते हैं। वह कहते हैं– 'आपने देखा होगा कि कई बार सोये हुए आदमी की आँखें खुली होती हैं। परन्तु सुषुप्ति में होने के कारण, वह मनुष्य, आँखें खुली होने पर भी आँखों के सामने की वस्तुओं को नहीं देखता। इसी प्रकार, जब कोई मनुष्य पूर्णतया प्रभु-मनन में तल्लीन होता है, वह भी अपनी खुली आँखों के सामने से गुजरने वाले व्यक्तियों अथवा पदार्थों की ओर आकृष्ट नहीं होता। अतः अब सोचना यह है कि आत्मा के उपस्थित होते हुए और आँखें भी खुली होते वह कौन-सा साधन रूप तीसरा पदार्थ है जिसका प्रयोग न करने के कारण मनुष्य आँखों से देखने का काम नहीं ले सकता। वह साधन 'मन' है। क्योंकि वह आत्मा और आँख इत्यादि इन्द्रियों से पृथक है, अतः वह प्रकृतिकृत परन्तु सूक्ष्म है।'

परंतु उन लोगों के(ऊपर दिए गए) उदाहरण पर यदि आप विचार करेंगे तो आप देखेंगे कि उनकी मान्यता सत्य नहीं। बात यह है कि 'मन'(जो कि यहाँ स्वयं आत्मा ही का ध्यान अथवा अवधान नाम की योग्यता-शक्ति का पर्यायवाची है) एक समय एक ही व्यक्ति, पदार्थ अथवा क्रिया में तल्लीन हो सकता है, एक ही बात पर विचार कर सकता है, एक ही विषय का मनन अथवा रसास्वादन कर सकता है।

अतः प्रभु-मनन में अथवा परमात्मा के ध्यान में जिस व्यक्ति का उदाहरण ऊपर दिया गया है, उस ही से स्पष्ट है कि उसका मन प्रयुक्त तो हो रहा है परन्तु वह इन्द्रियों द्वारा ग्रह्य वस्तुओं से भिन्न किसी सत्ता पर एकाग्र होने के कारण, आँखों के खुला होने पर भी आँखों के विषय को ग्रहण नहीं कर पा रहा। स्पष्ट है कि 'मन' यहाँ स्वयं आत्मा ही के ध्यान, अवधान, मनन, चिन्तन इत्यादि की योग्यता एवं शक्ति है। अतः मन नाम को कोई प्रकृतिकृत पदार्थ आत्मा से भिन्न मानना, मन को न जानने ही के कारण है। -क्रमशः

शालीमार बाग-दिल्ली। महाशिवरात्रि के अवसर आयोजित कार्यक्रम में केक कंटिग करते हुए नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. बृजभूषण, ब्र.कु. विधात्रि,ओ.आर.सी., ब्र.कु. बबिता तथा अन्य।

मजलिस पार्क-दिल्ली। त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर आयोजित कार्यक्रम में नवनिर्वाचित विधायक राजकुमार भाटिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. राजकुमारी दीदी। कार्यक्रम में उपस्थित रहे ब्र.कु. शारदा, इन्द्रानगर गुरूद्वारा के प्रबंधक सरदार बलवंत सिंह, आरडब्ल्यूए के अध्यक्ष राकेश तथा पूर्व निगम पार्षद गरिमा गुप्ता।

कौल-हरियाणा। शिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए विधायक सतपाल जांबा,हल्का पुंडरी, जिला परिषद चेयरमैन कर्मवीर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुदर्शन, ब्र.कु. सरोज,कुरुक्षेत्र।

नोयडा-उ.प्र.। गार्डेनिया ग्लोरी, सेक्टर 46 में शिव जयंती महोत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. आंचल, ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. पारूल, इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन की प्रोफेसर डॉ. नीतू जैन एवं मनोवैज्ञानिक प्रिया भार्गव। कार्यक्रम में उपस्थित रहे आरके सिंह,सेवानिवृत्त आईएएस, अरुण कुंद्रा,आयकर वकील, रवींद्र जैन,वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा पंकज माथुर,पूर्व निदेशक,आईओसी जेवी।

कादमा-हरियाणा। ८९वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर शिव संदेश शोभायात्रा को हरी झण्डी दिखाकर शुभांरभ करते हुए श्री राधा-कृष्ण गौशाला कादमा के सचिव कमल सिंह, सूबेदार पवन कान्हड़ा, ब्र.कु. वसुधा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति, अशोक शर्मा रामबास सरपंच प्रतिनिधि, सुबे स्वामी पंच, सुबेदार रोहताश सांगवान कुब्जा नगर, महावीर शास्त्री, विनोद सांगवान पूर्व मुख्याध्यापक तथा अन्य।

ओआरसी-गुरुग्राम(हरियाणा)। ८९वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती कार्यक्रम में केक कटिंग करते हुए ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. विजया दीदी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

लोधी रोड-दिल्ली। सेवाकेन्द्र पर आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में उपस्थित रहे जेबी सैनी,कार्यकारी निदेशक,एएआई, ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. गिरिजा दीदी एवं प्रतिभागी।

मोहाली-पंजाब। ८९वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मोहाली रोपड़ क्षेत्र की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेमलता दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. रमा दीदी, नगर निगम के उप-महापौर कुलजीत सिंह बेदी, पंजाब के वन संरक्षक विशाल चौहान,आईएफएस, वेरका मिल्क प्लांट के जनरल मैनेजर उत्तम कुमार, एसडीएम दमनजीत कौर, पंजाब पुलिस हाउसिंग निगम के मुख्य अभियंता रणजोध सिंह, मोहाली जिला योजना बोर्ड की चेयरपर्सन प्रभजोत कौर तथा अन्य अतिथिगण।